राष्ट्रवाद, सार्वभौमिकता, धर्म निरपेक्षता का शिक्षा से अन्तर्सम्बन्ध (टैगोर व कृष्णमूर्ति के विचारों के विशेष सन्दर्भ में)

राष्ट्रवाद और शिक्षा
(Nationalism and Education)

परिचय → राष्ट्रवाद, राष्ट्रीयता को जोड़ने वाली शक्ति है, जो नागरिकों को एक एकता के सूत्र में बाँधती है। यह मानव को प्रेरणा देती है कि वह राष्ट्र के कल्याण के आगे अपनी निजी कल्याण को त्याग दे, और राष्ट्र की इच्छा शक्ति के अधीन कर देवे है और राष्ट्र एक तत्व मीमांसात्मक वस्तु है, जिसके ऊपर और कुछ विचार नहीं किया जा सकता। राष्ट्रीयता की शक्ति सब अन्य भौतिक शक्तियों से बेहतर समझी जाती है।

वर्तमान समय में राष्ट्रवाद को समझना बहुत आवश्यक है। आज देश की सुख शांति और वैभव का स्थान साम्प्रदायिकता ने ले लिया है, जिसके द्वारा देश के अं

ARYAN Page No. Date / /

राष्ट्रीयता या राष्ट्रवाद की भावना समाप्त होती जा रही है। कृष्णमूर्ति के विचारों के अनुसार आज के व्यक्ति में सर्वे भवन्तु सुखिनः की भावना जागृत हो गई है। व्यक्ति के अन्दर राष्ट्रीयता की भावना तभी कायम रहती है, जब देश के भावी नागरिकों के अन्दर राष्ट्रीयता की भावना विकसित होगी। विद्यार्थियों के अन्दर राष्ट्रीयता की भावना शिक्षा के द्वारा ही संभव है। राष्ट्रवाद ~~की भावना विकसित~~ के सन्दर्भ में गाँधी और टैगोर दोनों के विचार एक जैसे हैं। टैगोर राष्ट्रवादी होने के नाते शिक्षा को राष्ट्रीय जागृति का उत्तम एवं सफल साधन मानते थे। उन्होंने अपने विचारों लेखों और कविताओं के द्वारा व्यक्तियों को राष्ट्र प्रेम की ओर आकर्षित किया और उन्हें राष्ट्रीय एकता की अनुभूति कराई।

उद्देश्य :- (Objective)

1. व्यक्तियों का समाजीकरण (Socialization of Individuals)

व्यक्तियों को एकता के सूत्र में बांध कर रखना राष्ट्रीयता की सबसे बड़ी शक्ति है, जो

एकता को सारे देश में संभव बनाती है राष्ट्रीयता की भावना को व्यक्तियों में अन्तर्निविष्ट करने में शिक्षा एक खास भूमिका निभाती है। यही कारण है कि लगभग सब देश यह अपना प्रमुख कर्तव्य मानते हैं कि इस प्रकार की शिक्षा अपने बालकों को दें कि वह एक बेहतर नागरिक बन सके।

(2) देशभक्ति की भावना विकसित करना :- To develop the spirit of Patriotism

कुछ ऐसे भी राष्ट्र हैं, जो इस बात पर विश्वास रखते हैं कि शिक्षा के ऊपर पूर्ण नियंत्रण रखा जाये ताकि इसके द्वारा बालकों के मन को इस प्रकार बना दिया जाये कि वह सदैव अपने राष्ट्र, देश को सर्वोपरि समझे जिसकी ओर उनकी पूर्ण वफादारी हो। ऐसे देशों में शिक्षा का संगठन इस प्रकार होता है कि प्रत्येक शैक्षिक पक्ष राज्य द्वारा नियंत्रित होता है और बालक अपने जीवन के प्रारंभ से ही अपने देश को सब चीजों से ऊपर स्थान दे

(3) समाज सेवा की भावना विकसित करना :-

Developing a Spirit of Social Service

राष्ट्रीयता ऐसी शिक्षा की ओर संकेत करती है, जो राष्ट्रीय एकता को प्रदान करे एवं समाज सेवा की भावना विकसित करें। इस प्रकार की शिक्षा की उन्मुखता होती है, राष्ट्रीय पुनः निर्माण की एवं राष्ट्रीय प्रगति करती है। राष्ट्रीय एकता तभी संभव है, जब नागरिक विभिन्न प्रजातियों, वर्गों, सामाजिक समूहों, राज्यों प्रान्तों या सांस्कृतिक समूहों के सदस्य होते हैं, वह अपने राष्ट्र की ओर प्रेम का भाव विकसित करें और मिल जुलकर राष्ट्रीय प्रगति की चेष्टा करें एवं राष्ट्र के हित की ओर कार्य करें।

(4) सामाजिक एवं आर्थिक जीवन को अच्छा बनाना

Make Social and Economic life better :-

कोई भी राष्ट्र तभी प्रगति कर सकता है, जब प्रत्येक नागरिक को शिक्षा प्राप्त हो जिसके द्वारा देश का सामाजिक एवं आर्थिक जीवन अच्छा हो सके। राष्ट्र सदैव भ्रष्ट हो जाता है, यदि

उसने अंध विश्वास पनपते है, दूषित परम्पराऐं होती है, और खराब रीति रिवाज़ होते है। तो समाज पर इन्हीं का प्रभाव पड़ता है, अतः उचित शिक्षा द्वारा हम इन अंध विश्वासों एवं दूषित वातावरण से मुक्ति पा सकते। जिससे देश का आर्थिक विकास होगा।

(5) संवेगात्मक तथा बौद्धिक वातावरण सृजन करना (Creating Emotional and intellectual environment)

समाज में बौद्धिक एवं संवेगात्मक वातावरण ही समाज को शुद्धता की ओर ले जाता है। यह बात सर्वमान्य है कि शिक्षा को निर्देशित होना चाहिए, जिससे राष्ट्रीय भावना का विकास हो और समाज सुधारक कार्य किया जा सके।